व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक (FACTORS AFFECTING PERSONALITY)

व्यक्तित्व प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न गति तथा बढ़ने वाली वस्तु है। व्यक्ति जन्म समय, शारीरिक बनावट, अभिप्रेरकता या स्वभाव में एक-दूसरे से अलग होते हैं। इन भिन्नताओं के क्या कारण है ? मूल और प्राथमिक समानताओं के रहने पर भी भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व का विकास क्यों होता है ? इन प्रश्नों के उत्तर व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों में पाए जाते हैं। इन कारकों का वर्गीकरण दो बिन्दुओं में किया जा सकता है—

1. अनुवांशिक या जैवकीय कारक (Heredity or Biological Factors)
2. वातावरणीय कारक (Environmental Factors)

आनुवंशिक या जैवकीय कारक (HEREDITY OR BIOLOGICAL FACTORS)

व्यक्ति के व्यक्तित्व पर आनुवंशिक कारकों का अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पड़ता है। इसका कारण यह है कि व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक विशेषताएँ विरासत में मिलती हैं। इसलिए इन्हें वैयक्तिक या जैवकीय कारक भी कहा जाता है। अनुवांशिक कारक के विभिन्न प्रकार या रूप निम्नलिखित हैं—

I. शारीरिक गठन (Physique)
II. बुद्धि (Intelligence)
III. आकर्षक रंग-रूप (Attractive Complexion)
IV. शारीरिक स्वास्थ्य या दशाएँ (Physical Health or Conditions)
V. लैंगिक भिन्नता (Sex Differences)
VI. जन्म क्रम (Birth Order)
VII. स्नायुविक दुर्बलता (Nervous Disability)
VIII. अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ (Endocrine Glands)।

शारीरिक गठन के अन्तर्गत रूप-रंग, शारीरिक बनावट, भार, वाद, वाणी या स्वर आते हैं। साधारण बोलचाल में किसी सुन्दर, आकर्षक शारीरिक रचना, रूप, रंग और स्वास्थ्य को देखकर उसके व्यक्तित्व को अच्छा मान लिया जाता है।

शरीर की अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से जो आन्तरिक स्राव होता है उसे हॉरमोन्स (Hormones) कहते हैं। हॉरमोन्स रक्त में मिलकर शरीर के विभिन्न अंगों में पहुँचता है। ये ग्रन्थियाँ जब उचित रूप से कार्य नहीं करती हैं अर्थात् उचित मात्रा में ग्रन्थि-स्राव रक्त मिलकर शरीर के सभी अंगों में न पहुँचता रहे तो सम्बन्धित अंगों की कार्य प्रणाली और विकास में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। इससे व्यक्ति की आकृति, गठन, स्वास्थ्य, संवेगशीलता, बुद्धि और व्यक्तित्व के अन्य पहलू प्रभावित होते

Scanned with CamScanner

है। गलग्रन्थि (Thyroid Gland), उपवृक्क ग्रन्थि (Adrenal Gland), पोष ग्रन्थि (Pituitary Gland), यौन ग्रन्थि (Sex Glands) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

तंत्रिकातंत्र का सर्वप्रथम अंग मस्तिष्क होता है। किसी उद्दीपन (Stimulus) या परिस्थिति विशेष का ज्ञान तंत्रिकाओं के सहारे मस्तिष्क को होता है, फिर मस्तिष्क तंत्रिकाओं द्वारा आदेश देता है, तब व्यक्ति उद्दीपन या परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया (Response) करता है। इस प्रकार व्यक्त तंत्रिका तन्त्र की सहायता से परिस्थितियों को समझता है तथा व्यवहार करता है। उसके व्यक्तित्व का परिचायक बहुत अंशों में उसका व्यवहार होता है।

बुद्धि व्यक्तित्व के निर्धारण में प्रमुख भूमिका निभाती है। तीव्र बुद्धि, सामान्य बुद्धि और मंद बुद्धि व्यक्ति के व्यक्तित्व के व्यक्तित्व में भिन्नता दिखाई देती है।

वातावरणीय कारक
(ENVIRONMENTAL FACTORS)

बालक के व्यक्तित्व के निर्माण और विकास पर सबसे अधिक प्रभाव वातावरण का पड़ता है। वातावरण की समस्त शक्तियाँ और परिस्थितियाँ बालक के जीवन, स्वभाव, व्यवहार को प्रभावित करती हैं। वातावरण में चारों ओर की परिस्थितियाँ (भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक व मानसिक) सम्मिलित होती हैं। जब बच्चा माँ के गर्भ में होता है तो माँ की ऊष्मा से संचित होता है, माँ के द्वारा ही उसका पोषण होता है, परन्तु जब वह माँ के शरीर से बाहर आता है तो बाह्य पर्यावरण की शक्तियों से प्रभावित होता है। भोजन, जल, जलवायु, रहने का स्थान, भौतिक संसाधन आदि सभी चीजों का उस पर प्रभाव पड़ता है।

भौतिक वातावरण के साथ-साथ बालक का सामाजिक वातावरण भी उसके व्यवहार को प्रभावित करता है। सामाजिक वातावरण से तात्पर्य व्यक्ति को उपलब्ध सामाजिक अंतःक्रिया की गुणवत्ता एवं संभावना से है। सामाजिक वातावरण के प्रमुख घटक निम्न हैं—

- परिवार (Family)
- पड़ोस (Neighbourhood)
- विद्यालय (School)
- परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status of the Family)
- समूह (Group)
- धर्म (Religious)
- संस्कृति (Culture)
- आकांक्षा स्तर (Level of Aspiration)
- जन संचार माध्यम (Mass Media)

जलवायु की दशा भी व्यक्तित्व के विकास पर प्रभावित करता है। ठण्डी जलवायु वाले देशों के लोग स्वस्थ, सुन्दर, परिश्रमी एवं बुद्धिमान होते हैं, इसके विपरीत जहाँ गर्मी पड़ती है वहाँ के लोग प्रायः अस्वस्थ, काले एवं आलसी होते हैं।

Scanned with CamScanner

व्यक्ति समाज में जन्म लेता है और जीवन पर्यन्त समाज में रहता है। अतः उस पर समाज की विभिन्न संस्थाओं (धर्म, विद्यालय, पड़ोस आदि), संस्कृति, समूह आदि का व्यापक प्रभाव पड़ता है। परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बालक के विकास पर प्रभाव पड़ता है। सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवार वाले बालकों में उच्च वर्ग के बालकों की तुलना में नेतृत्व क्षमता, साहस, आक्रामकता एवं उत्साह का अभाव होता है तथा इन बालकों में हीन भावना, कुण्ठा तथा भग्नाशा उत्पन्न हो जाती है।

व्यक्तित्व का आकांक्षा स्तर उसके व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करता है। आकांक्षा स्तर के अनुकूल प्रयास करने से व्यक्ति को सफलता मिलती है। इसके विपरीत यदि आकांक्षा स्तर उच्च होता है, किन्तु तदनुरूप प्रयास नहीं किए जा पाते हैं तब सफलता की संभावना कम होती है। असफलता की स्थिति में व्यक्ति के व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान समय में जन संचार माध्यम (रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ) के कार्यक्रमों एवं किसी-न-किसी रूप में सभी व्यक्तियों को प्रभावित कर रहे हैं। जन संचार के साधन अब मात्र मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन ही नहीं कर रहे हैं, वरन् व्यक्तियों की सम्पूर्ण जीवन शैली (बातचीत, पोशाक, भाषा, व्यवहार, क्रिया-कलाप, खान-पान, आदि) को प्रभावित कर रहे हैं। बालकों की मनोवृत्तियों एवं प्रवृत्तियों के लिए बहुत अधिक सीमा तक जनसंचार माध्यम ही उत्तरदायी हैं।

●●

Scanned with CamScanner